विभिन्न धर्म व मनुष्य

डॉ. वन्दना गर्ग

धर्म मनुष्य जीवन का आवश्यक अंग है धर्म से मनुष्य ऐहिक और आरम्भिक सुख के लिए सहज सरल और अनुकरणीय उपाय बताता है। आज के भागम–भाग जिन्दगी में मनुष्य धर्म की उपयोगिता को भूल रहा है। वह काम और अर्थ के पीछे दौड़ रहा है। और धर्म जैसी कल्याणकारी वस्तु की उपेक्षा करता है जो लोग धर्म की विविध संस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं वे अपने स्वार्थ की दृष्टि से धर्म को अपना धन्धा बनाकर अपनी कामनाओं की पूर्ति का एक साधन बना लेते हैं।

धर्म का सर्वाधिक आन्तरिक तत्व ईश्वर की खोज और ईश्वर की सिद्धि है। धार्मिक नेताओं ने धर्म को वह मार्ग माना है जिस पर चलकर आत्मा अपने निज भण्डार अर्थात् परमात्मा तक पहुँचती है। धर्म आत्मा को परमात्मा से मिलाने का साधन हैं।